International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की सृजनात्मकता का एक अध्ययन

सुषमा ज्योति[1], डॉ. बन्दना कुमारी[2]

[1]शोध छात्र, शिक्षा संकाय, आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय, पटना
[2]शोध निदेशिका, HNSITE सासाराम

Abstract

सृजनात्मकता का अभिप्राय नवीनता या मौलिकता से है, यह नवीन वस्तु एवं वांछित वस्तु के उत्पादन करती है | सृजनात्मकता एक मानसिक संक्रिया है जो भौतिक परिवर्तनों को जन्म देती है। सृजनात्मक में समस्या समाधान, मौलिकता, खोजपराकता, लचीलापन, नवीनता, प्रवाह, कल्पना, लेखन, रचना, संगीत, चित्रकला आदि का गुण पाया जाता है | प्रस्तुत शोध पत्र में माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की सृजनात्मकता का अध्ययन किया गया है | अध्ययन के लिए **'प्रतिदर्श सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है |** इस हेतु शोधकर्त्री के द्वारा पटना जिले के कुल 100 छात्र-छात्राओं को यादृच्छिक प्रतिदर्श प्रतिचयन विधि से प्रतिदर्श के रूप में चयन किया गया, जिसमें 68 छात्र एवं 52 छात्राओं को चयनित किया गया है | अध्ययन के उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की सृजनात्मक शक्ति का स्तर ज्ञात करना तथा लिंग एवं विद्यालय के प्रकार के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की सृजनात्मक शक्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करना है | शोधकर्त्री ने के द्वारा सृजनात्मक क्षमता को मापने के लिए **Dr. V.K. Kumar और Dr. E.R. Holman** के द्वारा मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया है | प्रदत्तों के सांख्यकीय विश्लेषण हेतु शोधकर्त्री द्वारा प्रतिशत, माध्य, मानकविचलन और टी-अनुपात का प्रयोग किया गया है, इसके लिए M.S. EXEL तथा SPSS साफ्टवेयर का सहारा लिया गया है | अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में लिंग के अनुसार माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की सृजनात्मक शक्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है | लेकिन विद्यालय के प्रकार के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की सृजनात्मक शक्ति में सार्थक अंतर पाया गया है |

Keywords: सृजनात्मकता, माध्यमिक विद्यालय, छात्र-छात्रा, मानकीकृत, सांख्यिकी विश्लेषण

भूमिका

किसी भी राष्ट्र का भविष्य बच्चें होते हैं, क्योंकि वे ही देश का भावी नागरिक होते हैं और भविष्य में

उनके द्वारा ही राष्ट्र का निर्माण तथा विकास होगा | कहा जा सकता है कि किसी भी राष्ट्र को अगर विकास और प्रगति करना है तो सबसे पहले देश के सभी बच्चों की शिक्षा पर जोर देना होगा क्योंकि शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास कर उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन लाकर उसे सभ्य, सुसंस्कृत, योग्य एवं कुशल नागरिक बनाता है | व्यक्ति के शैक्षिक तथा व्यावसायिक क्रियाकलापों में सृजनात्मकता का विशेष महत्त्व होता है | सृजनात्मकता का बोध व्यक्ति के कार्यशैली से होता है | व्यक्ति की सृजनात्मकता का आकलन उसकी सामाजिक तथा व्यावसायिक कार्यों के प्रदर्शन से होता है | सृजनात्मकता का अभिप्राय नवीनता या मौलिकता से है, यह नवीन वस्तु एवं वांछित वस्तु के उत्पादन करती है | यह नवीन वस्तु सम्पूर्ण समाज के लिए नवीन हो सकती है या उस व्यक्ति के लिए नवीन हो सकती है | सृजनात्मकता एक मानसिक संक्रिया है जो भौतिक परिवर्तनों को जन्म देती है । सृजनात्मक में समस्या समाधान, मौलिकता, खोजपराकता, लचीलापन, नवीनता, प्रवाह, कल्पना, लेखन, रचना, संगीत, चित्रकला आदि का गुण पाया जाता है | अतः राष्ट्र को प्रगति की ओर ले जाने के लिए यह आवश्यक है कि बच्चों की सर्वंगीण विकास की जाय और जिसके लिए सृजनात्मक क्षमता को उभारने और निखारने का प्रयास किया जाना चाहिए |

सृजनात्मकता किसी वस्तु, विचार, कला, साहित्य से संबद्ध किसी समस्या का समाधान निकालने आदि के क्षेत्र में कुछ नया रचने, आविष्कृत करने या पुनर्सृजित करने की प्रक्रिया है । यह एक मानसिक संक्रिया है जो भौतिक परिवर्तनों को जन्म देती है । **कोल और ब्रूस के अनुसार** "सृजनात्मकता मौलिक उत्पाद के रूप में मानव मस्तिष्क को समझने, व्यक्त करने तथा सराहना करने की योग्यता एवं क्रिया है |"

सृजनात्मकता का अर्थ

सृजनात्मकता का अंग्रेजी शब्द क्रियेटिविटी होता है | इसके समानान्तर उत्पादन, रचनात्मकता आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है | उत्पादकता में प्रोडक्टीविटी का बोध होता है जो किसी वस्तु के उत्पादन का आभास कराता है | सृजनात्मकता चिन्तन पर आधारित होता है | चिन्तन के दो प्रकार हैं, सरल एवं यांत्रिक | यांत्रिक चिन्तन केन्द्रीय चिन्तन और विकेन्द्रीय चिन्तन पर आधारित होता है, पर इसमें विकेन्द्रीय चिन्तन विशेष रूप से पाया जाता है |

सृजनात्मकता के तत्व

सृजनात्मकता में मुख्य रूप से चार तत्व पाये जाते हैं जो निम्नलिखित हैं -

1. प्रवाह - प्रवाह से तात्पर्य किसी दी गयी समस्या पर अधिकारिक विचारों या प्रत्युत्तर को प्रस्तुत से है |
2. विविधता - विविधता से अभिप्राय किसी समस्या पर दिये गये प्रत्युत्तरों या विकल्पों में विविधता के होने से है |

3. मौलिकता - मौलिकता से अभिप्राय व्यक्ति के द्वारा प्रस्तुत किये गये विकल्पों या उत्तरों के असमान्य अथवा अन्य व्यक्तियों के उत्तरों से भिन्न होने से है |
4. विस्तारण - विस्तारण से तात्पर्य दिए गए विचारों या भावों की विस्तृत व्याख्या व्यापक पूर्ति या गहन प्रस्तुतिकरण से होता है |

सृजनात्मकता का महत्त्व

हमारे भारत को समृद्ध बानाने के लिए हमें प्रत्येक भारतीय को शिक्षित करना होगा | शिक्षा में सृजनात्मकता एक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है | सृजनात्मकता का स्तर सभी बालकों के लिए अलग-अलग होता है | सृजनात्मकता किसी व्यक्ति को नये विचार उत्पन्न करने, समस्याओं का नये ढंग से समाधान खोजने अविष्कार करने, काव्य लिखने, कला प्रदर्शन, प्रयोग करने, और नई वस्तुओं को बनाने में सक्षम बनाती है | सृजनात्मकता एक व्यक्ति को नये विचार उत्पन्न करने, समस्याओं का नये ढंग से समाधान खोजने, प्रयोग करने, अविष्कार करने, और नई वस्तुओं को बनाने में सक्षम बनाती है |

अध्ययन की प्रासंगिकता

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर हम देखते हैं कि सृजनात्मकता बच्चों की शिक्षा और व्यक्तित्व को विशेष रूप से प्रभावित करता है | अध्ययन की एक तत्काल आवश्यकता छात्र-छात्राओ की सृजनात्मकता पर लिंग और विद्यालय के प्रकार के योगदान को समझना है | अतः इनके महत्त्व को देखते शोधकर्त्री के द्वारा अपने शोध अध्ययन के लिए माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की सृजनात्मकता का एक अध्ययन का अध्ययन किया गया है |

शोध समस्या कथन

माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की सृजनात्मकता का एक अध्ययन

शोध के उद्देश्य

माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की सृजनात्मक शक्ति के स्तर ज्ञात करना |

शोध की परिकल्पनाएं

1. लिंग के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की सृजनात्मक शक्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करना |
2. विद्यालय के प्रकार के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की सृजनात्मक शक्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करना |

शोध की नल परिकल्पनाएं

1. लिंग के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की सृजनात्मक शक्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करना |
2. विद्यालय के प्रकार के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की सृजनात्मक शक्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करना |

सम्बन्धित साहित्य समीक्षा

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए शोधकर्त्री के द्वारा भारत और विदेशों में हुए सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किया गया | सृजनात्मकता के सन्दर्भ में किया गया है जिसका विवरण इस प्रकार है -

सिंह,.एवं पासवान (2022) ने संवेगात्मक बुद्धि के संदर्भ में विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया | अध्ययन के परिणाम में 1.विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि और सृजनात्मकता में धनात्मक सह-सम्बन्ध पाया गया | 2. विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया | 3.ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में अंतर नहीं पाया गया | 4. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में अंतर नहीं पाया गया |

यादव, पी. एस. (2019) ने छात्रों में सृजनात्मकता के विकास में अध्यापक एवं विद्यालय की भूमिका का अध्ययन किया | शोध का अध्ययन गुणात्मक ढंग से किया गया | शोध निष्कर्ष में यह बताया गया कि हर व्यक्ति में सृजनात्मकता कुछ ना कुछ पाया जाता है जिसे उचित प्रयास से बढ़ाया और निखारा जा सकता है | सृजनात्मकता को बढ़ाने में बालक के घर ,परिवार के साथ-साथ अध्यापक और विद्यालय संगठन का बहुत बड़ा योगदान है |

पाण्डेय,एम. (2018) ने सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया | शोध अध्ययन के लिए एक्स-पोस्ट फक्टो अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया | अध्ययन के परिणाम में पाया गया कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कुल विद्यार्थियों एवं छात्रों की सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण का प्रभाव पाया गया जबकि छात्राओं की सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण का प्रभाव नहीं पाया गया |

सल्वेरा और अन्य (2017) ने प्राथमिक विद्यालय के प्रथम और दूसरे साल के बच्चों में भावात्मक बुद्धि और सृजनात्मक का अध्ययन किया | परिणाम के रूप में आयु और लिंग के आधार पर छात्र और छात्राओं के सृजनात्मकता में सार्थक अंतर पाया गया | लेकिन आयु और लिंग के आधार पर छात्र और छात्राओं की भावात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया | शोध के द्वारा यह भी पता चलता है कि भावात्मक बुद्धि का प्रभाव सृजनात्मकता पर नहीं पड़ता है |

नादेरी और अन्य (2010) ने सृजनात्मकता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध लिंग भेद का एक अध्ययन का अध्ययन किया | अध्ययन के परिणाम के रूप में पुरुष और महिला दोनों में सृजनात्मकता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच महत्वपूर्ण संबंध पाया गया |

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में **माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की सृजनात्मकता का अध्ययन** किया गया है | अध्ययन के लिए प्रतिदर्श सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है | इस हेतु शोधकर्त्री के द्वारा पटना जिले के कुल 100 छात्र-छात्राओं को याद्दच्छिक प्रतिदर्श प्रतिचयन विधि से प्रतिदर्श के रूप में चयन किया गया, जिसमें 68 छात्र एवं 52 छात्राओं को चयनित किया गया | शोधकर्त्री ने के द्वारा सृजनात्मक क्षमता को मापने के लिए **Dr. V.K. Kumar और Dr. E.R. Holman** के द्वारा मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया है | आंकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण के लिए शोधकर्त्री द्वारा प्रतिशत, माध्य, मानकविचलन और टी-अनुपात का प्रयोग किया गया | इसके लिए M.S. EXEL तथा SPSS साफ्टवेयर का सहारा लिया गया है |

1.1 सृजनात्मक शक्ति के स्तर का प्रतिशतीय विवरण

तालिका 1

क्रम संख्या	चर	जनसंख्यात्मक चर		निम्न		औसत		उच्च	
				संख्या	प्रतिशत (%)	संख्या	प्रतिशत (%)	संख्या	प्रतिशत (%)
1	सृजनात्मक शक्ति	लिंग	पुरुष छात्र	17	25	33	49	18	26
			स्त्री छात्र	7	13	30	58	15	29
2	सृजनात्मक शक्ति	विद्यालय के प्रकार	निजी	10	16	45	71	8	13
			सरकारी	12	21	33	58	12	21

1.2 सृजनात्मक शक्ति के स्तर का प्रतिशतीय विश्लेषण की व्याख्या

तालिका संख्या- 1 .1 के क्रम संख्या 1 में शोधकर्त्री ने माध्यमिक विद्यालय के 25% पुरुष छात्रों में निम्न सृजनात्मकता, 49% पुरुष छात्रों में औसत सृजनात्मकता तथा 26% पुरुष छात्रों में उच्च सृजनात्मकता स्तर प्राप्त किया जबकि 13% महिला छात्रा में निम्न सृजनात्मकता, 58% छात्राओं में औसत सृजनात्मकता तथा 29% छात्राओं में उच्च सृजनात्मकता स्तर प्राप्त किया है |

तालिका संख्या- 1.1 के क्रम संख्या 2 में शोधकर्त्री ने 16% निजी माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं में निम्न सृजनात्मकता, 71% निजी माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं में औसत सृजनात्मकता तथा 13% निजी माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं में उच्च सृजनात्मकता स्तर प्राप्त किया है जबकि 21% सरकारी माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं में निम्न सृजनात्मकता, 58% सरकारी माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं में औसत सृजनात्मकता तथा 21% सरकारी माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं में उच्च सृजनात्मकता स्तर प्राप्त किया है |

2.0 नल परिकल्पनाओं की जाँच विश्लेषण एवं व्याख्या

2.1 लिंग के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की सृजनात्मक शक्ति में सार्थक अन्तर नहीं है |

तालिका संख्या 2.1

लिंग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी-अनुपात	सार्थकता स्तर 5%सार्थकता स्तर
पुरुष	68	304.99	28.036	1.22 .	सार्थक नहीं है
महिला	52	310.71	21.551		

(5% सार्थकता स्तर पर टी-अनुपात का मान 1.98 है)

उपर्युक्त तालिका संख्या -1 में शोधकर्त्री द्वारा प्राप्त टी-अनुपात 1.22 है जो टी-तालिका मान 1.98 से कम है | अतः नल परिकल्पना को स्वीकृत की जाती है अर्थात् लिंग के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है | **लिंग के आधार पर सृजनात्मकता के माध्य, मानक विचलन को आलेख संख्या -1 में प्रदर्शित किया गया है |**

आरेख संख्या-2.1

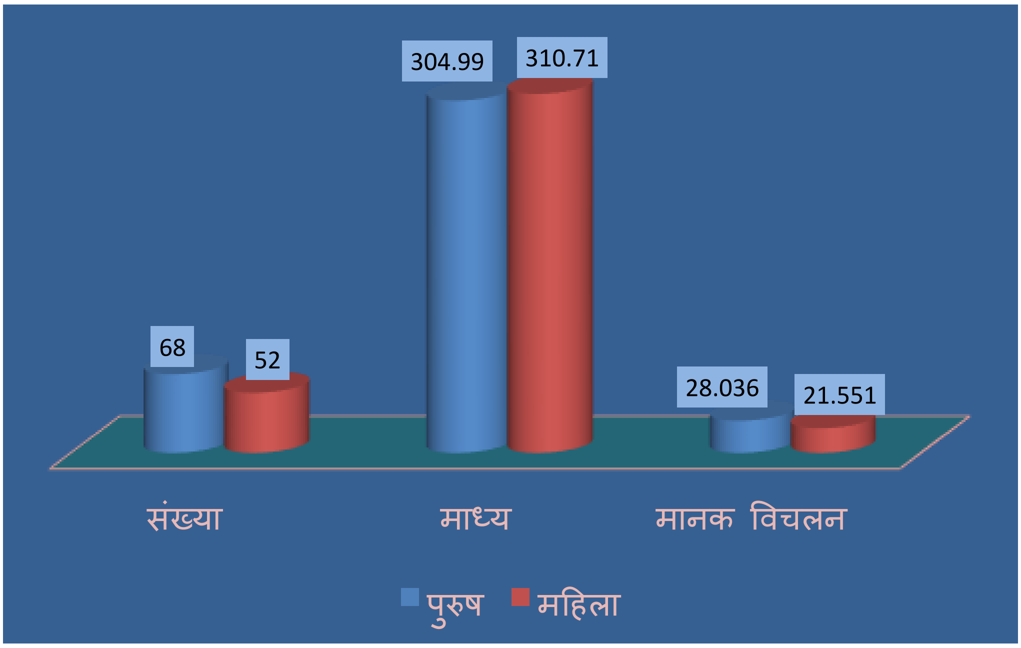

2.2 विद्यालय के प्रकार के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की सृजनात्मक शक्ति में सार्थक अन्तर नहीं है |

तालिका -2

विद्यालय के प्रकार	**संख्या**	**माध्य**	**मानक विचलन**	**टी-अनुपात**	**सार्थकता स्तर (5%सार्थकता स्तर पर)**
निजी	63	302.95	27.798	2.068	**सार्थक**
सरकारी	57	312.46	21.837		

उपर्युक्त तालिका संख्या- 2 में शोधकर्त्री द्वारा प्राप्त टी-अनुपात 2.068 है जो टी-तालिका मान 1.98 से अधिक है | अतः नल परिकल्पना को अस्वीकृत की जाती है अर्थात् विद्यालय के प्रकार के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर है **| विद्यालय के प्रकार के आधार पर सृजनात्मकता के माध्य, मानक विचलन को आलेख संख्या -2 में प्रदर्शित किया गया है |**

आलेख संख्या -2

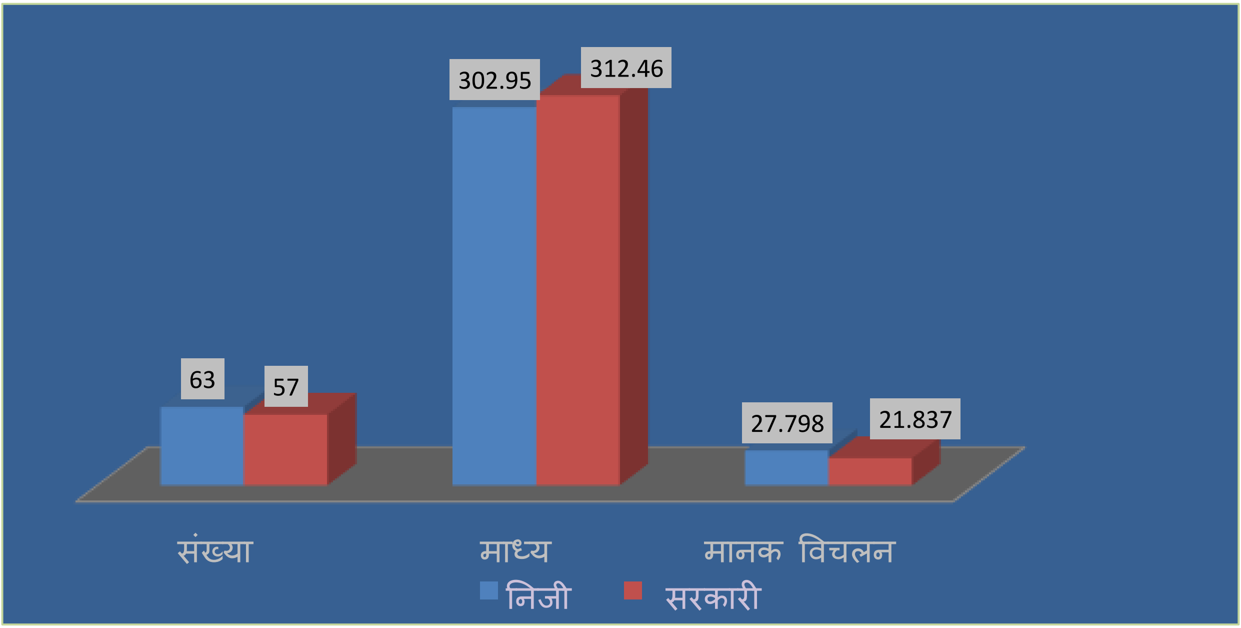

निष्कर्ष

1. लिंग के अनुसार माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है |
2. विद्यालय के प्रकार के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर है |

अनुशंसा

शोधकर्त्री के द्वारा प्राप्त परिणामों के द्वारा यह अनुशंसा की जाती है कि हर व्यक्ति में सृजनात्मकता कुछ ना कुछ पाया जाता है जिसे उचित प्रयास से बढ़ाया और निखारा जा सकता है | निम्नांकित प्रयासों से सृजनात्मकता को बढ़ाया जा सकता है -

1. बच्चों के सृजनात्मक विकास के लिए माता-पिता, शिक्षक तथा विद्यालय सभी को मिलकर एक साथ कार्य करना चाहिए |
2. प्रत्येक बालक विशेषताएँ, क्षमता और रूचि अलग-अलग तरह की होती है | विद्यालय को चाहिय कि वह प्रत्येक बच्चा की विशेषता, क्षमता, और रूचि को पहचाने और फिर उनकी रूचि और क्षमता अनुसार शिक्षण कार्य करें |
3. विद्यालय में पुस्तकालय एवं प्रयोगशाला का उत्तम व्यवस्था होनी चाहिए जिससे की बच्चों में संज्ञानात्मक एवं सृजनात्मक क्षमता का विकास हो सके |
4. विद्यालय में खेल-कूद का मैदान होना चाहिए जहाँ बच्चों को खेलाकर उनका शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक गुणों का विकास को बढ़ाना चाहिय, जिससे की उनकी बौद्धिक एवं सृजनात्मक क्षमता बढ़ सके तथा उनकी व्यक्तित्व में निखार आ सके |

सुझाव

1. वर्तमान शोध के माध्यमिक विद्यालय के बच्चों की सृजनात्मक क्षमताओं के विकास पर लिंग और विद्यालय के प्रकार के प्रभाव को एक छोटे से प्रतिदर्श के ऊपर देखा गया है, भविष्य में एक बड़ा प्रतिदर्श पर शोध कार्य किया जा सकता है |
2. प्राथमिक विद्यालय या उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की सृजनात्मक क्षमता का स्तर ज्ञात किया जा सकता है |
3. बच्चों की सृजनात्मकता और संवेगात्मक बुद्धि के मध्य संबंध ज्ञात किया जा सकता है |
4. बच्चों की सृजनात्मकता और तार्किक गणितीय बुद्धि के मध्य संबंध ज्ञात किया जा सकता है |
5. बच्चों की सृजनात्मकता और उपलब्धि के मध्य संबंध ज्ञात किया जा सकता है |

सन्दर्भ सूचि

पुस्तक

1. अस्थाना, बि. एवं अस्थाना श्वेता (2012), मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन,अग्रवाल पब्लिकेशनस, एटिनथ एडिसन्स 2012, आगरा-2 |
2. इग्नु, ई.एस.-335, अध्यापक और विद्यालय (2010), अध्यापक भूमिका और विकास, (भाग-2), इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त वि'वविद्यालय, 2001, पुनः मुद्रित जुलाई, 2010 ISBN-81-266-0391-7 |
3. कॉल, लोकेश. (2010), शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि., न्यू देल्ही फोर्थ एडिशन 2009, सेकंड रीप्रिंट 2010 |
4. गुप्ता, एस. पी. (1996), जॉब शटीसफैक्शन एंड दी टीचर, शारदा पार्क भवन-2, युनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद |
5. गुप्ता एस.पी. एवं गुप्ता अलका (2014), उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, नवीन संस्करण (2014) |
6. जसवाल, सीताराम (2009), शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा-7 |
7. बौद्ध, कमल प्रसाद (2010), शिक्षा दर्शन, अलका प्रकाशन, खजांची रोड,पटना-4 प्रथम संस्करण 2010 |
8. मदान, पूनम (2013), उदयीमान भारतीय समाज में शिक्षक, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा-2, प्रथम संस्करण, 2013 |
9. माथुर, एस. एस. (2013), शिक्षा के दार्शनिक तथा सामजिक आधार, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा-2, एटथ एडिसन 2013 |
10. मंगल, एस. के.(2013) शिक्षा मनोविज्ञान, पब्लिश्ड बाई असोके के. घोष, 2008 PHII लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड,देल्ही |

11. शर्मा, आर. ए. एवं चतुर्वेदी, शिखा (2013), निर्देशन एवं परामर्श के मूल तत्व, आर लाल बुक डिपो, बेगम ब्रिज रोड, मेरठ, संस्करण :2013

जर्नल सूची

1. सिंह, के. पी. एवं पासवान, के. एम्. (2022), संवेगात्मक बुद्धि के संदर्भ में विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ लिटरेसी एंड एजुकेशन*, 2 (2), 107 -110 , E-ISSN : 2789-1615, P-ISSN : 2789-1607 , Impact Factor : 5.69
2. website : www.educationjournal.info
3. यादव, पी. एस. (2019), छात्रों में सृजनात्मकता के विकास में अध्यापक एवं विद्यालय की भूमिका, *एसियन जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च & टेक्नोलॉजी*, 9 (2), 98-101 , ISSN : 2347-4947 website : http://www.tspmt.com
4. पाण्डेय, एम. (2018), उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण के प्रभाव का अध्ययन, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ साइंटिफिक रिसर्च इन साइंस,इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी*, 4 (6), Page-282-293, E ISSN : 2395-1990
5. salavera, C., Usan, P., Chaverri, I., Gracia, N., Aure, P., Delpueyo, M., (2017). emotional intelligence and creativity in first and second year primary school children. *Procedia-Social and Behavioral Sciences 237, 1179-1183*
6. View at www.sciencedirect.com
7. Naderi, H., Abdullah, R., Aizan, H., Sharir, J. and Kumar V., (2010) Relationship between creativity and academic achievement : A study of gender differences, *Journal of American Science* 6 (1),181-190, 2010
8. website www.academia.edu